प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 37 * JUN 2010 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Jun 01.mp3	29	⊕	⊕		सीताजी द्वारा अपना तथा भ०राम के निनि०स्वरूप का निरूपण, हनुमानजी का स्वयं का स्वरूप वर्णन,राम देव व सीता देवालय हैं	*1*
2	Jun 02.mp3	49	⊕	⊕		परम ब्रह्म और शब्द ब्रह्म-वेद, भ०के सर्वश्रेष्ठ नाम ओंकार का स्वरूप निरूपण एवं स्वर-व्यंजन में विस्तार	*a*
3	Jun 03.mp3	35	⊕	⊕		सीताजी द्वारा अपना तथा भ०राम के निनि०स्वरूप का निरूपण, अद्भुत रामायण में सहस्त्र मुख रावण की कथा	*2*
4	Jun 04.mp3	43	⊕	⊕		भ०के सर्वश्रेष्ठ नाम ओंकार का स्वरूप निरूपण एवं स्वर-व्यंजन में विस्तार,ओंकार ही प्रणव प्रकृति माया है,विश्वविराट भी ओं०है	*b*
5	Jun 05.mp3	*30*	⊕	⊕	⊕	भ०राम का **आत्मा परमात्मा अनात्मा**-स्वरूप निरूपण, दृष्टांत-देह में घटाकाश,बाहर महाकाश,बुद्धि अवच्छिन्न प्रतिबिम्बाकाश-मिथ्या	Imp
6	Jun 06.mp3	38	⊕	⊕	Imp	भ०के सर्वश्रेष्ठ नाम ओंकार का स्वरूप निरूपण एवं स्वर-व्यंजन/जगत/त्रिपुटी में विस्तार+माण्डूक्य,ओंकार दृश्य व ब्रह्म द्रष्टा है	*c*
7	Jun 07.mp3	*29*	⊕	⊕	⊕	राम नाम की महिमा, नाम के ज्ञान से भवसागर पार हो जाता है, रकार-पाप व अकार-अज्ञान नाशक है, मकार शान्ति दायक है	Imp
8	Jun 08.mp3	36	⊕	⊕		गीता-अ०१३/२-३ : दो ही पदार्थ हैं, सभी जड़ देह दृश्य क्षेत्र हैं व उनमें चेतन द्रष्टा क्षेत्रज्ञ मैं ही हूं और अर्जुन वही तू है	*1*
9	Jun 09.mp3	59	⊕	⊕	Imp	गीता-अ०१३/२-३ : संसार में दो ही पदार्थ हैं, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ प्रकृति-पुरुष माया-ब्रह्म जड़-चेतन दृश्य-द्रष्टा, ये ही सम्पूर्ण ज्ञान है	*2*
10	Jun 10.mp3	32	⊕		मा०१	भ०राम और हनुमान सम्वाद, सभी वेद वेदान्त व उपनिषदों का उल्लेख, **श्रेष्ठतम माण्डूक्य उप० निरूपण + शान्ति मंत्र भावार्थ**	A
11	Jun 11.mp3	50	⊕			त्रि०वेदः-कर्मयोग-सामान्य एवं विशेष धर्म निरूपण, दैवीय संपदा-सत्वगुण व आसुरी संपदा-रजो+तमोगुण से उत्पन्न होते हैं	
12	Jun 12.mp3	29	⊕		मा०२	भ०राम और हनुमान सम्वाद,**माण्डूक्य उपनिषद निरूपण,** प्रतिबिम्ब-वि०तै०प्रा० तीन चरण यानि दृश्य ओंकार का स्वरूप निरूपण	B
13	Jun 13.mp3	46	⊕	⊕		अर्जुन विषाद योग एवं गीता-अ०२/११ : ज्ञान योग आरम्भ	
14	Jun 14.mp3	27	⊕		मा०३	भ०राम और हनुमान सम्वाद, **माण्डूक्य उपनिषद निरूपण,** बिम्ब-तुरीय चौथा यानि द्रष्टा ब्रह्म का स्वरूप निरूपण	C
15	Jun 15.mp3	48	⊕	⊕	⊕	गीता-अ०२/११-१३ : ज्ञान योग - अर्जुन मैं अनाम और अरूप हूँ, मैं ही व्यापक अखंड आत्मा व परमात्मा हूँ, अर्जुन तत्वमसि	
16	Jun 16.mp3	30	⊕		मा०४	**माण्डूक्य उपनिषद निरूपण : सारांश,** रामोत्तरतापनी उपनिषद - जा०लक्ष्मण स्व०शत्रुघ्न सु०भरत तु०राम एवं मूल प्रकृति सीता हैं	D
17	Jun 17.mp3	45	⊕			गीता-अ०२/१३ : देह-देही दो ही पदार्थ हैं, देह नाशवान है और देही नित्य अविकारी व्यापक सुखरूप द्रष्टा है + गर्भोपनिषद	
18	Jun 18.mp3	36	⊕			वेद त्रिकाण्डमय है - ३-ज्ञानकाण्ड २-भक्तिकाण्ड एवं १-कर्मकाण्ड निरूपण : वर्णाश्रमनुसार सामान्य एवं विशेष कर्तव्य कर्म	1
19	Jun 19.mp3	44	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/३०+१४-१६ : देह-देही दो पदार्थ हैं, देह असत दुःख रूप व देही नित्य व्यापक द्रष्टा सच्चि० है, अर्जुन तत्वमसि	**
20	Jun 20.mp3	29	⊕			वेद त्रिकाण्डमय है - १-कर्मकाण्ड निरूपण : वर्णाश्रमनुसार सामान्य एवं विशेष कर्तव्य कर्म	2
21	Jun 21.mp3	40	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/१६ : सत्-असत् दो पदार्थ हैं, मैं सत्-नित्य चेतन दृष्टा हूँ व जगत असत्-अनित्य जड़ दृश्य है,मैं और तू अभेद हैं	**
22	Jun 22.mp3	30	⊕	⊕	⊕	वेद त्रिकाण्डमय है - कर्मकाण्ड के लिये अज्ञान जनित देहाभिमान अनिवार्य है,सभी कर्म देह में हैं देही अकर्म असंग दृष्टा मात्र है	3
23	Jun 23.mp3	49	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/१६ : सत् सदा रहता है और असत् कभी नहीं रहता है, हम दृष्टा आत्मा सत् हैं व दृश्य देह असत् हैं	**
24	Jun 24.mp3	36	⊕			वेद त्रिकाण्डमय है - कर्मकाण्ड एवं भक्तिकाण्ड निरूपण	4
25	Jun 25.mp3	44	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/१६ : हम चेतन दृष्टा आत्मा सत् हैं व जड़ दृश्य देह असत् हैं, स्थू० सू० का० शरीर एवं जीव का स्वरूप निरूपण	**
26	Jun 26.mp3	47	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/१६ : हम चेतन दृष्टा आत्मा तत्व हैं व जड़ दृश्य देह निष्तत्व हैं, स्थू०सू०का० शरीर एवं जीव का स्वरूप निरूपण	**
27	Jun 27.mp3	41	⊕	⊕	⊕	सत्-असत् दो पदार्थ हैं,विभिन्न त्रिपुटी एवं परा-अपरा प्रकृति निरूपण,संसार माया है जो ब्रह्म में ही लीन होती है ब्र०ही सत्य है	Imp
28	Jun 28.mp3	32	⊕	⊕		वेद त्रिकाण्डमय है - भक्तिकाण्ड उल्लेख - ब्रह्म का नि०नि० व स०सा० स्वरूप निरूपण - दृष्टांत-व्यापक एवं प्रकट अग्नि	5
29	Jun 29.mp3	39	⊕	⊕	ज्ञान	सत्-असत् दो ही पदार्थ हैं,दृष्टा आत्मा ही सत् है,सारा दृश्य प्रपंच असत् है जो सत् में ही विलीन होता है,१ अद्वैत आत्मा ही है	**
30	Jun 30.mp3	30	⊕			वेद त्रिकाण्डमय है - भक्तिकाण्ड निरूपण - भगवत कथा ही श्रेष्ठ अमृत है, ४ प्रकार के भक्त - आर्त, सकामी, जिज्ञासु, ज्ञानी	6
31	Jun 31.mp3	46	⊕	⊕	⊕	**कृपणता, मोह, धर्म, निःश्रेयःसुख - विवेचना, नित्य-नैमित्य-महा-आत्यन्तिक प्रलय, तुरीय अवस्था, आभास एवं नित्य सुख निरूपण**	Imp
32	Jun 32.mp3	37	⊕	⊕	ज्ञान	सत्-असत् दो पदार्थ हैं-सत् द्रष्टा सच्चि०ब्रह्म है एवं असत् दृश्य दुःखरूप जा०स्व०सु०है, **हमारा स्वरूप अचल सनातन ब्रह्म है**	Imp
33	Jun 33.mp3	27	⊕	⊕	⊕	भगवान और जीव के बीच में सु०माया मेघ व्यवधान है एवं जा०-स्व०बरसात है हमारा स्वरूप देह नहीं है द्रष्टा सच्चि०ब्रह्म है	Imp
34	Jun 34.mp3	39	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/१७ :अविनाशी जल एक है विनाशी तरंगें अनेक हैं, अनेक-रूप तरंगे भी जल ही है अतः एक-रूप जल ही सत् है	**
35	Jun 35.mp3	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुप्लब्ध	NA
36	Jun 36.mp3	42	⊕	⊕	ज्ञान	सत्-असत् दो पदार्थ हैं दृष्टा सत् व दृश्य माया असत् है माया का कार्य झूठा ही होता है, जगत माया का कार्य है अतः झूठा है	**
37	Jun 37.mp3	29	⊕		Imp	नवधा-भक्ति : एकादशी एवं दशहरा का अर्थ राम है, उपवास का शब्दार्थ/लक्ष्यार्थ, हर तरंग में जल का दर्शन ही यथार्थ ज्ञान है	7
38	Jun 38.mp3	23	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/१६-१७ : सत्-असत् दो पदार्थ हैं दृष्टा आत्मा सत् व्यापक असंग है व असत् दृश्य जगत मायामेघ की बरसात है	**
39	Jun 39.mp3	27	⊕			वेद त्रिकाण्डमय है-भक्तिकाण्ड-नवधा-भक्ति - राम समुद्र व संत मेघ हैं, संत राम से बढ़ कर हैं-क्यों कि वह राम से मिलाते हैं	8
40	Jun 40.mp3	41	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/१८-१९:देह अन्त वाले हैं सब देहों में एक ही देव है वह बुद्धि के उपर व्यापक साक्षी चेतन निर्गुण अचल आत्मा है	**
41	Jun 41.mp3	30	⊕			वेद त्रिकाण्डमय है-भक्तिकाण्ड-नवधा-भक्ति -संत व सत्संग महिमा-ज्ञान एवं संसृति का नाश,जगत असत् और भ०से अभिन्न है	9
42	Jun 42.mp3	44	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/२०-२२:आत्मा अकर्म अविनाशी नित्य है,सभी नाशवान देह वस्त्र समान हैं,सब देहों में एक ही आत्मा है वही तू है	**
43	Jun 43.mp3	30	⊕			वेद त्रिकाण्डमय है-भक्तिकाण्ड-नवधा-भक्ति - आठॅव जथालाभ संतोषा , सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा	10
4	Jun 44.mp3	44	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/२२ : **देह देही दो पदार्थ हैं**,सभी देहों में चेतन देही मैं ही हूँ व सभी वस्त्र समान जड़ देह मेरी माया से बने हैं	**
45	Jun 45.mp3	29	⊕		Imp	वेद त्रिकाण्डमय है-भक्तिकाण्ड-नवधा-भक्ति -सातॅव-मोहि मय जग देखा, एक माटी ही सत्य है घटमठ सब वाणी के विकार हैं	11
46	Jun 46.mp3	46	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/२२ :वस्त्र-वस्त्रधारक तुल्य **देह-देही दो पदार्थ हैं**,३ देह व पंचकोष निरूपण,देह मायाकृत हैं,हम माया प्रेरक आत्मा हैं	**
47	Jun 47.mp3	45	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/२२ : **देह देही दो पदार्थ हैं,** देह जड दृश्य व देही चेतन द्रष्टा है, जा०स्व०सु० एवं तीनों व्यष्टि-समष्टि शरीर विवेक	**
48	Jun 48.mp3	29	⊕		Imp	वेद त्रिकाण्डमय है-भक्तिकाण्ड-नवधा-भक्ति सातॅव-मोहि मय जग देखा,मायाकृत नामरूप जगत भी मैं ही हूँ,सत-असत मैं ही हूँ	12
49	Jun 49.mp3	39	⊕	⊕	ज्ञान	गीता-अ०२/२२-२३ :**देह देही दो पदार्थ हैं**,देह जड़ और वस्त्र के समान व देही द्रष्टा चेतन अछेद्य असंग नित्य पुरुष आत्मा है	Imp
50	Jun 50.mp3	31	⊕		प्रहला	वेद त्रिकाण्डमय है-भक्तिकाण्ड **नवधा-भक्ति** आठॅव-जथालाभ संतोष व परदोष न देखना,नवम्-निष्कपट व्यवहार,मेरा पूर्ण भरोसा	13

51	Jun 51.mp3	47			ज्ञान	गीता-अ०२/२३-२८ : देही आत्मा अछेद्य अव्यक्त नित्य अचल अविकारी एवं निज स्वरूप है व व्यक्त दृश्यमान देह नाशवान हैं	**
52	Jun 52.mp3	31			Imp	वेद त्रिकाण्डमय है-भक्तिकाण्ड-नवधा-भक्ति सातँव-आठँव-नवमू मैं जल व जगत तरंग समान है, सत भी मैं हूँ असत भी मैं हूँ	14
53	Jun 53.mp3	33			ज्ञान	गीता-अ०२/२३-३० : देही दृष्टा व्यापक अछेद्य अबध्य नित्य अचल सनातन अविकारी एवं निज स्वरूप है देही आत्मा को जानना ही कर्तव्य है, मायाकृत व्यक्त दृश्यमान सभी देह नाशवान हैं, मैं चेतन आत्मा सब में हूँ और सबसे असंग हूँ	**